॥ तैत्तिरीय ब्राह्मणम् ॥

॥चतुर्थः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः ॥

ब्रह्म॑णे ब्राह्म॒णमाल॑भते। क्ष॒त्राय॑ राज॒न्य᳚म्। म॒रुद्भ्यो॒ वैश्य᳚म्। तप॑से शू॒द्रम्। तम॑से॒ तस्क॑रम्। नार॑काय वीर॒हण᳚म्। पा॒प्मने᳚ क्ली॒बम्। आ॒क्र॒याया॑यो॒गूम्। कामा॑य पुꣳ॑श्च॒लूम्। अति॑क्रुष्टाय मा॒गधम्॥१॥

गी॒ताय॑ सू॒तम्। नृ॒त्ताय॑ शैलू॒षम्। धर्मा॑य सभाच॒रम्। न॒र्माय॑ रे॒भम्। नरि॑ष्ठायै भीम॒लम्। हसा॑य॒ कारि᳚म्। आ॒न॒न्दाय॑ स्त्रीष॒खम्। प्रमु॑दे कुमारीपु॒त्रम्। मे॒धायै॑ रथका॒रम्। धैर्या॑य॒ तक्षा॑णम्॥२॥

श्रमा॑य कौला॒लम्। मा॒यायै॑ कार्मा॒रम्। रू॒पाय॑ मणिका॒रम्। शुभे॑ व॒पम्। श॒र॒व्या॑या इषुका॒रम्। हे॒त्यै ध॑न्वका॒रम्। कर्म॑णे ज्याका॒रम्। दि॒ष्टाय॑ रज्जुस॒र्गम्। मृ॒त्यवे॑ मृग॒युम्। अन्त॑काय श्व॒नित᳚म्॥३॥

स॒न्धये॑ जा॒रम्। गे॒हायो॑पप॒तिम्। निर्॒ऋ॑त्यै परिवि॒त्तम्। आर्त्यै॑ परिविविदा॒नम्। अरा᳚ध्यै दिधिषू॒पति᳚म्। प॒वित्रा॑य भि॒षज᳚म्। प्र॒ज्ञाना॑य नक्षत्रद॒र्॒शम्। निष्कृ॑त्यै पेशस्का॒रीम्। बला॑योप॒दाम्। वर्णा॑यानू॒रुध᳚म्॥४॥

न॒दीभ्य॑ः पौञ्जि॒ष्टम्। ऋ॒क्षीका᳚भ्यो॒ नैषा॑दम्। पु॒रु॒ष॒व्या॒घ्राय॑ दु॒र्मद᳚म्। प्र॒यु॒द्ध्य उन्म॑त्तम्। ग॒न्ध॒र्वा॒प्स॒राभ्यो॒ व्रात्य᳚म्। स॒र्प॒दे॒व॒ज॒नेभ्योऽप्र॑तिपदम्। अवे᳚भ्यः कित॒वम्। इ॒र्यता॑या॒ अकि॑तवम्। पि॒शा॒चेभ्यो॑ बिदलका॒रम्। या॒तु॒धाने᳚भ्यः कण्टकका॒रम्॥ ५॥

उ॒त्सा॒देभ्य॑ः कु॒ब्जम्। प्र॒मुदे॑ वाम॒नम्। द्वा॒र्भ्य॑ः स्रा॒मम्। स्वप्ना॑या॒न्धम्। अध॑र्माय बधि॒रम्। सं॒ज्ञाना॑य स्मरका॒रीम्। प्र॒का॒मो॒द्या॑योप॒सद᳚म्। आ॒शि॒क्षायै᳚ प्र॒श्निन᳚म्। उ॒प॒शि॑क्षाया॑ अभिप्र॒श्निन᳚म्। म॒र्यादा॑यै प्रश्नवि॒वा॒कम्॥ ६॥

ऋत्यै᳚ स्ते॒नहृ॑दयम्। वैर॑हत्याय॒ पिशु॑नम्। विवि॑त्त्यै क्ष॒त्तार᳚म्। औप॑द्रष्टाय सङ्ग्रही॒तार᳚म्। बला॑यानुच॒रम्। भू॒म्ने प॑रिष्क॒न्दम्। प्रि॒याय॑ प्रियवा॒दिन᳚म्। अरि॑ष्ट्या अश्वसा॒दम्। मेधा॑य वासः पल्पू॒लीम्। प्र॒का॒माय॑ रजयि॒त्रीम्॥ ७॥

भायै᳚ दार्वाहा॒रम्। प्र॒भाया॑ आग्ने॒न्धम्। नाक॑स्य पृ॒ष्ठाया॑भिषे॒क्तार᳚म्। ब्र॒ध्नस्य॑ वि॒ष्टपा॑य पात्रनिर्णे॒गम्। दे॒व॒लो॒काय॑ पेशि॒तार᳚म्। म॒नु॒ष्य॒लो॒काय॑ प्रकरि॒तार᳚म्। सर्वे᳚भ्यो लो॒केभ्य॑ उपसे॒क्तार᳚म्। अव॑र्त्यै व॒धायो॑पमन्थि॒तार᳚म्। सु॒व॒र्गाय॑ लो॒काय॑ भागदु॒घम्। वर्षि॑ष्ठाय॒ नाका॑य परिवे॒ष्टार᳚म्॥ ८॥

अर्मे᳚भ्यो हस्ति॒पम्। ज॒वाया᳚श्व॒पम्। पुष्ट्यै᳚ गोपा॒लम्।

तेजसेऽजपालम्। वीर्यायाविपालम्। इरायै कीनाशम्। कीलालाय सुराकारम्। भद्राय गृहपम्। श्रेयसे वित्तधम्। अध्यक्षायानुक्षत्तारम्॥९॥

मन्यवेऽयस्तापम्। क्रोधाय निसरम्। शोकायाभिसरम्। उत्कूलविकूलाभ्याँत्रिस्थिनम्। योगाय योक्तारम्। क्षेमाय विमोक्तारम्। वपुषे मानस्कृतम्। शीलायाञ्जनीकारम्। निर्ऋत्यै कोशकारीम्। यमायासूम्॥१०॥

यम्यै यमसूम्। अथर्वभ्योऽवतोकाम्। संवत्सराय पर्यारिणीम्। परिवत्सरायाविजाताम्। इदावत्सरायापस्कद्वरीम्। इद्वत्सरायातीत्वरीम्। वत्सराय विजर्जराम्। सर्वन्त्सराय पलिक्नीम्। वनाय वनपम्। अन्यतोरण्याय दावपम्॥११॥

सरोभ्यो धैवरम्। वेशन्ताभ्यो दाशम्। उपस्थावरीभ्यो बैन्दम्। नड्वलाभ्यः शौष्कलम्। पार्याय कैवर्तम्। अवार्याय मार्गारम्। तीर्थेभ्य आन्दम्। विषमेभ्यो मैनालम्। स्वनेभ्यः पर्णकम्। गुहाभ्यः किरातम्। सानुभ्यो जम्भकम्। पर्वतेभ्यः किंपूरुषम्॥१२॥

प्रतिश्रुत्काया ऋतुलम्। घोषाय भषम्। अन्ताय बहुवादिनम्। अनन्ताय मूकम्। महसे वीणावादम्। क्रोशाय तूणवध्मम्। आक्रन्दाय दुन्दुभ्याघातम्। अवरस्पराय शङ्खध्मम्। ऋभुभ्योजिनसन्धायम्। साध्येभ्यश्चर्मम्णम्।॥१३॥

बीभत्सायै पौल्कसम्। भूत्यै जागरणम्। अभूत्यै स्वपनम्। तुलायै वाणिजम्। वर्णाय हिरण्यकारम्। विश्वेभ्यो देवेभ्यः सिध्मलम्। पश्चाद्दोषाय ग्लावम्। ऋत्यै जनवादिनम्। व्यृद्ध्या अपगल्भम्। सꣳशराय प्रच्छिदम्॥१४॥

हसाय पुꣳश्चलूमा लभते। वीणावादङ्गणकङ्गीताय। यादसे शाबुल्याम्। नर्माय भद्रवतीम्। तूणवध्मङ्ग्रामण्यं पाणिसङ्घातन्नृत्ताय। मोदायानुक्रोशकम्। आनन्दाय तलवम्॥१५॥

अक्षराजाय कितवम्। कृताय सभाविनम्। त्रेताया आदिनवदर्शम्। द्वापराय बहिः सदम्। कलये सभास्थाणुम्। दुष्कृताय चरकाचार्यम्। अध्वने ब्रह्मचारिणम्। पिशाचेभ्यः सैलगम्। पिपासायै गोव्यच्छम्। निर्ऋत्यै गोघातम्। क्षुधे गोविकर्तम्। क्षुत्तृष्णाभ्यान्तम्। यो गां विकृन्तन्तं माꣳसं भिक्षमाण उपतिष्ठते॥१६॥

भूम्यै पीठसर्पिणमा लभते। अग्नयेऽꣳसलम्। वायवे चाण्डालम्। अन्तरिक्षाय वꣳशनर्तिनम्। दिवे खलतिम्। सूर्याय हर्यक्षम्। चन्द्रमसे मिर्मिरम्। नक्षत्रेभ्यः किलासम्। अह्ने शुक्लं पिङ्गलम्। रात्रियै कृष्णं पिङ्गाक्षम्॥१७॥

वाचे पुरुषमा लभते। प्राणमपानव्व्यानमुदानꣳ समानन्तान् वायवे। सूर्याय चक्षुरा लभते। मनश्चन्द्रमसे। दिग्भ्यः श्रोत्रम्।

प्र॒जाप॑तये॒ पुरु॑षम्॥१८॥

अथै॒तान॑रूपेभ्य॒ आल॑भते। अति॑ह्रस्व॒मति॑दीर्घम्। अतिकृ॑श॒मत्य॑ꣳसलम्। अति॑शुक्ल॒मति॑कृष्णम्। अति॑श्लक्ष्ण॒मति॑लोमश

अति॑किरिट॒मति॑दन्तुरम्। अति॑मिर्मिर॒मति॑मेमिषम्। आ॒शायै॑ जा॒मिम्। प्र॒ती॒क्षायै॑ कुमा॒रीम्॥१९॥

ब्रह्म॑णे गी॒ताय॒ श्रमा॑य स॒न्धये॑ न॒दीभ्य॑ उत्सा॒देभ्य॒ ऋत्यै॒ भाया॒ अर्मे᳚भ्यो म॒न्यवे॑ य॒म्यै॑ दश॑दश॒ सरो᳚भ्यो॒ द्वाद॑श प्रति॒श्रुत्का॑यै बीभ॒त्सायै॒ दश॑दश॒ हसा॑य स॒प्ताक्ष॑रा॒जाय॒ त्रयो॑दश॒ भूम्यै॒ दश॑ वा॒चे षडथ॒ नवैका॒न्नवि॑ꣳशतिः॥१९॥

ब्रह्म॑णे य॒म्यै॑ नव॑दश॥१९॥

ब्रह्म॑णे कुमा॒रीम्॥

हरि॑ः ओम्॥

इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः॥

This PDF was downloaded from http://stotrasamhita.github.io.
GitHub: http://stotrasamhita.github.io | http://github.com/stotrasamhita
Credits: http://stotrasamhita.github.io/about/